# नमस्कार मेरा कर स्वीकार

नमस्कार मेरा कर स्वीकार, मैं तोरे चरण में आई हूँ।
एक बार पिया कर स्वीकार, मैं तोरे शरण में आई हूँ।।

जीवन की थारी में 'मैं' को धर कर, तेरे दर पर लाई हूँ।
देख पिया इस 'मैं' को ही, तोरे चरण चढ़ाने आई हूँ।।

नमस्कार मेरा कर स्वीकार, 'मैं' मेरी मिट जायेगी।
जन्म जन्म सों रोग लगी, इक पल में ही मिट जायेगी।।

जो गीत मेरा नहीं राम मेरे, मिथ्या क्यों बताऊँ तुझे।
भाव मेरे वहाँ हैं नहीं, कैसे राम रिझाऊँ तुझे।।

अन्य के शब्द मैं क्या कहूँ, अभी सन्त पिया मैं हुई नहीं।
वैराग्य की बातें क्या कहूँ, वैराग्य रुचि भी हुई नहीं।।

इक टूटा सा मन मेरे पास है, वही चरण में लाई हूँ।
'मैं' को ही अपनाती रही, वही शरण में लाई हूँ।।

पढ़ पढ़ के रे शास्त्र तेरे, अब तक समझ न पाई हूँ।
तूने जो शब्द कहे, वह दोहराती आई हूँ।।

तेरे शब्द तुमसे ही कहूँ, अरे यह कहने से क्या होगा।
उन शब्दन् में गर भाव धरूँ, क्या निर्मल चित्त मेरा होगा।।

अन्य के मंत्र मैं क्या कहूँ, मुझे मन्त्र ही बन जाने दो।
सन्तन् की पिया बात कहूँ, पहले सन्त बन जाने दो।।

*प्रार्थना शास्त्र नं. २*

*प्रार्थना नं. ३७७, ३८३*

# अनुक्रमणिका


३ **प्रेम भरा निमन्त्रण...**
श्रीमती पम्मी महता

५ **'भोगैश्वर्य में पड़ा रहा,**
**श्रेय पथ पर क्या जायेगा?'**
प्रस्तुति - श्रीमती वंदना वैद्य

९ **आई पंथी सगल जमाती**
**मनि जीतै जगु जीतु।**
अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

१४ **गर कर्ता भगवान हैं, तब सब सत् है!**
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता - भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' में से

२१ **अनेक रूप वह माटी धरे,**
**माटी माटी ही रह जाये**
'मुण्डकोपनिषद्' में से

२६ **आपके क़दमों ने ही**
**उस परम सत्य का निरूपण किया!**
श्रीमती पम्मी महता

३० **श्रद्धा - ब्रह्म विद्या का आधार**
पिता जी के प्रश्नोत्तर

३५ **अर्पणा समाचार**


❖ ❖ ❖

*सम्पादक की ओर से*

*गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।*


***सम्पादक :*** *पूनम मलिक*
***सह सम्पादक :*** *श्रीमती साधना पाल*

***पता :*** अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

**श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा २६ अगस्त २०१६ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित**

# प्रेम भरा निमन्त्रण...

परम पूज्य श्री हरि माँ!

श्री हरि चरणन् में कोटि-कोटि प्रणाम!

आज की इस शुभ व मंगलमयी बेला में श्रद्धासुमन भेंट करते हुये आप को व आपकी पूरी जगती को आप के जन्मदिनों की ढेरों-ढेरों मुबारक देती हूँ... जन्माष्टमी व आपका जन्मदिवस दोनों पर्व एक ही मास में जो आते हैं! धन्य है यह जीव जगत् जो इन पर्वों को मनाने का यूँ आनन्द लेते हैं! भगवान करे, एकनिष्ठ मन व असीम श्रद्धा भक्तिभाव से इन्हें मनायें! परम सौभाग्य की यह बेला है!

आपका व भगवान श्री कृष्ण का कोटि-कोटि धन्यवाद!!

इसी लिये, देखिये न माँ,
क्यों आज गुलशन नज़र आ रही है जमीं,
किसकी महक से महक रही हैं फ़िज़ायें हसीं!
किसकी जानिब से कौन आ रहा है इधर,
किसकी आहट पे लुटने को आज बैठे हैं सभी...

...अरे आओ!
आज नई शमा जलायें, कैसी ख़ुशियों का दिन है
आज दिलों को सजाओ, प्रभु जी के आने का दिन है
अपने अंजुमन सजाओ, आज ख़ुशियों का दिन है
ज़हनों पे उतरने का आज उनका यह दिन है
दिल के अरमां जगाओ, आज हमारा अपना यह दिन है
नई शमा जलाओ, आज उन्हीं पे लुटने का दिन है...

बरसों उनसे बातें की हैं, कितने भाव बहाये हैं,
ख़ुदा करे आज आप बहें आंतर से, यूँ ही भाव सजाये हैं...
कैसे-कैसे करम इस जगती पे आप प्रभु माँ ने फ़रमाये हैं!
अपनी ही बंदगी में आप ही ने हम सभी के हाथ उठाये हैं!
कौन करे इबादत, आपकी कब पूजा कर सका है कोई...
मेहर उसी की होती है, जब नवाज़ लिए जाते हैं हर कोई!
कैसे आये सकूँ इस दिल को, बिन देखे आपको हे प्रभु माँ
कैसे रहे ख़ाली अब कोई, जब आप ही आप हों यहीं कहीं
सुन लीजो पुकार आप दिल की...

आओ! आओ! हे परवरदिगार आओ!
उतर के हृदय में आज आओ, कितना आज ख़ुशियों का दिन है!
मेरी चाहत में चाहत मिलाओ, आपकी रहमत का यह दिन है
आइये, इस दिल से बह जाइये, आज आपके बहने का दिन है!
हे मेरे परवरदिगार! आओ, आ जाओ साईं रब!
आ भी जाओ, अब उतर आने का यारब्ब आपका यह दिन है...

ख़ुदा क़सम! आ जाइये, आ भी जाइये... आप ही के उतरने का दिन है
हे रब साईं! नई शमा जलाइये, कैसा ख़ुशियों का दिन है
आओ सदक़ा उतारें उनका, उन्हीं के उतरने का आज यह दिन है...
आओ अरमां सजाओ, किस क़दर मुबारक यह दिन है!
रहें आप दिलों में व रहते रहें यहीं, अब के आके लौटना न कभी.!
क्योंकि सत्युग की दस्तक बता रही है यही, यह आपके आने की घड़ी है...!

सच पूछिये हे माँ प्रभु जी, आज माँगने का नहीं, अपने समेत अपना सर्वस्व आपके क़दमों पे समर्पित करने का दिन है... मुहब्बत पे लुटा दें सर्वस्व अपना, यह ऐसा ही शुभ व मंगलमय दिन है! क्या दूँ तुझे ऐ मेहरबां मेरे, आज सच ही स्वयं को आपके क़दमों में देने का दिन है। ऐसे ही अरमां सजाये हुये हूँ क्योंकि आपका यह दिन हमारा ही शुभ व मंगलमय दिन है :

आप ही की ख़ुशी बने ख़ुशी मेरी,
यूँ ही तमन्ना के दीप जलाने का दिन है...
हुक्म करो! आप ही के हुक्म में रहूँ,
ऐसे ही माँ, इबादत करने का यह शुभ दिन है!
मुहब्बत पे लुट जाऊँ क्योंकि आज आपके क़दमों पे लुटने व मिटने का दिन है!
यही अरमां सजायें आज आपकी इस महफ़िल में बैठ कर...

यही ख़ामोश तोहफ़ा आपके क़दमों में रख दूँ, सच ही यह हमारा दिन है.!!
असीस मिले आपकी!

... मिले आप ही का प्यार, जो आप ही के प्रति हो जाये यह जीवन समर्पित। इन्हीं आपके क़दमों पे परवान चढ़ जाऊँ! कुछ भी मेरा मुझमें न रहे। बस पूर्ण जगती में रहें आप ही आप हे नाथ! अम्बर, धरती आप ही से सजी रहें जिसमें है पूर्ण जगती का कल्याण! आमीन!

तू ही तू इक तू ही तू! तू ही तू इक तू ही तू!!

श्री हरि माँ प्रभु जी का जन्मदिन व जन्म, हम सभी को ढेरों-ढेरों मुबारक रहे युगों-युगों तक!

आप ही की अपनी

पम्मी महता

# 'भोगैश्वर्य में पड़ा रहा, श्रेय पथ पर क्या जायेगा?'

*प्रस्तुति - श्रीमती वंदना वैद्य*

*परम पूज्य माँ एवं पूज्य छोटे माँ मन्दिर में*

**छोटे माँ** - आज हम श्रेय और प्रेय के विषय में जानना चाहते हैं, ताकि प्रेय से उठ कर श्रेय की तरफ़ चल पड़ें! इसे विस्तार से बता दें।

**परम पूज्य माँ** - विस्तार तो इसका छोटा सा है। एक कहता है, 'मैंने दुनिया बसानी है' और वह केवल दुनिया को ही पसंद करता है... यानि दुनिया को नहीं, वह अपने आप को पसंद करता है। वह कहता है, 'जो मैं चाहता हूँ सो होये! उसको पाने के लिये मैं सारी उम्र लगा दूँगा।'

जब हम मृत्यु के नज़दीक जाते हैं, हमारे पास सारी चीज़ें सर्वाधिक होती हैं। अगर हमारे पास ज्ञान भी हो, धन भी हो, जहान भी हो, जो कुछ भी हो उस समय सबसे अधिक होता है। कुल भी तब सबसे बड़ा होता है। वो ही समय हमारा संसार से विदाई का हो जाता है। 'मैं' के इर्द-गिर्द हम ने जो कुछ बनाया होता है, वो ही हमारी सारी उम्र

की कमाई होती है। वो प्रेय पथ की कमाई है। यह अन्तवान है, मिट जाने वाली है, हमारे साथ जाने वाली नहीं है। यह हमें नये जन्म में जाकर मालूम नहीं क्या देगी, क्या नहीं देगी। यह सब 'क्षर' है, नित्य नहीं है। यह तो प्रेय पथ हो गया।

श्रेय पथ का भाव यह है कि आप वह चाहते हैं जो नित्य है। भगवान जी गीता में कहते हैं :

- 'तू कहाँ से आया है, तू यह नहीं जानता...'

- 'कहाँ जायेगा, यह नहीं जानता...'

- 'तेरा तन थोड़ी देर के लिये उभरा है, इसके साथ इतना संग क्यों?'

जो इनसान इस सत्य का चिंतन एवं मनन करता है और इसकी तलाश में जाता है कि 'मैं कहाँ से आया हूँ, मैंने कहाँ पर जाना है? यह बीच में मेरा इतना संग क्यों?' वो इस संग को मिटाना चाहता है! वह तो श्रेय पथ पथिक हो गया। ऐसा व्यक्ति संग को मिटाना ही नहीं चाहता, बल्कि संग जाये या न जाये वो इसकी परवाह भी नहीं करता।

वास्तव में वो विषयों की परवाह नहीं करता। हैं तो हैं, नहीं तो न सही। वो एक बात जानना चाहता है कि 'मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? मैंने किधर जाना है? मैं इनसान हूँ, मेरे पास इनसानियत के गुण होने चाहियें। मैं सुख चाहता हूँ, मैं आनन्द चाहता हूँ। इस जीवन में मैं ख़ुशी से जीना चाहता हूँ। क्या चीज़ है जो मेरी ख़ुशी को भंग कर सकती है? जो कुछ भंग कर सकता है, वो मुझे नहीं चाहिये!' क्या विषय छूटेगा, क्या विषय नहीं छूटेगा, इसकी तरफ़ वो नहीं देखता। लेकिन उसका अपने ऊपर संयम होने लगता है। जिसका अपने ऊपर ही संयम नहीं है, वो आगे क्या जायेगा? जो सिर्फ़ **भोगैश्वर्य में पड़ा रहा, वो श्रेय पथ पर क्या जायेगा?**

यह लग्न कि हम कहाँ से आये हैं और हमने कहाँ जाना है... यह दोनों अव्यक्त की हैं, और इनमें अक्षर का तत्व है, नित्य का तत्व है। यानि व्यक्त हम थोड़ी देर के लिये हैं। आगे भी जाकर हमने अव्यक्त में जाना है।

ज़रा सूक्ष्म स्तर की बात कर रहे हैं! वास्तव में हम अव्यक्त ही हैं! जो थोड़े से वर्ष हम जीयेंगे... १०० वर्ष भी जी लिये तो अनन्त काल में वह कोई मायना नहीं रखते! श्रेय वाले कहते हैं कि अगर मैं १०० वर्ष जी भी लिया तो क्या लाभ? फिर जरजीर्ण शरीर लेकर! इसमें रोग भी आते हैं, कष्ट भी आते हैं और यह बदलता भी रहता है।

जाने कब कौन रोग पकड़ लेगा और हम आगे बढ़ ही नहीं सकेंगे... तब क्या करेंगे? दुनिया में तो सुख-दुःख लगे ही रहेंगे। तो इन सुख-दुःखों में रहने से बेहतर यह है, मैं

आनन्द को खोजूँ... और ऐसे खोजूँ कि मेरा अव्यक्त जो पीछे है और अव्यक्त जो आगे है, उसमें ही समा जायें। मैं जो अपने आप को व्यक्त समझ रहा हूँ, क्या मैं वास्तव में व्यक्त हूँ? एक शरीर उभर आया, उसके साथ संग करके मैं अपने आप को व्यक्त कहने लगा हूँ!

इनसान यह कहता है कि मैंने यह जानना है, 'मैं कहाँ से आया हूँ, मैंने कहाँ जाना है? मेरा अन्त भी अव्यक्त है, मेरा आदि भी अव्यक्त है, तो बीच में थोड़ी देर के लिये मैं दीख रहा हूँ इससे व्यक्त भाव में बैठने का फ़ायदा क्या? जिस तन में मैं बैठा हूँ, उसमें भी कभी मुझे याद रहता है, कभी मुझे याद नहीं रहता।' जीवन में कितना कुछ है जो हमारे अचेत में चला जाता है और वह हमारे ऊपर राज करता है। इसे चित्त की वृत्तियाँ कहते हैं।

जो चित्त की वृत्तियाँ हैं, यह सारी अव्यक्त हैं और हम इनको नहीं जानते। जो जन्म-जन्म के संस्कार हैं, वो संस्कार और स्मृति एक ही बात है, लेकिन जो चीज़ भूल जाती है और दब जाती है वो संस्कार बन के उभर आती है। पिछले जन्म में जो हुआ था, वो हम भूल गये हैं, पर उसके बीज साथ चले आते हैं। वो निहित, अदृश्य, अव्यक्त स्मृति है। उसे भी अपनी निर्धारित रेखा पर चल पड़ना है और उसने कहीं न कहीं जाकर पहुँच जाना है। वो भी अव्यक्त से उभरी है और अव्यक्त में जा रही है।

'मेरा चित्त भी अव्यक्त में बैठा है और मेरे से सारे कर्म करवा रहा है। जो आधुनिक है, जिसको मैं 'मैं' कहता हूँ, उसके अधीन न तो चित्त की वृत्तियाँ हैं और न वो संस्कार हैं जो अव्यक्त हैं। उन्होंने तो वहाँ पहुँच ही जाना है। मैं चाहूँ न चाहूँ, मैं देखूँ न देखूँ, मैं जानूँ न जानूँ! उन्होंने अपनी जगह पर पहुँच ही जाना है। जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, मेरे लिये मेरा वो भाग भी अव्यक्त ही है। केवल थोड़ा सा चेत स्तर पर रहता है।'

जब मुझसे कोई ग़लती हो जाती है तो मैं उसका समर्थन करने लग जाता हूँ। सो बहुत सारा समय मेरा उस अव्यक्त से निकली हुई वृत्ति का समर्थन करने में निकल जाता है। हम कहते हैं, 'मैंने ठीक बात की है, यही ठीक है और यही होनी चाहिये थी, मैंने कोई ग़लती नहीं की।'

कैसे मूर्ख हैं हम! अव्यक्त से कोई चीज़ आ गई, एक चिंगारी उठी उसने दूसरे का घर फूँक दिया। निकली तो हमारे आन्तर से थी और हमने उसको अपना लिया और कहा मैंने ठीक ही किया है। उस समय हमें कहना चाहिये था, 'अरे! कोई अव्यक्त से भाव निकला है और बाहर आ गया है, मैं क्यों उसका समर्थन करूँ?' लेकिन हम उसके पीछे चले गये और उसका समर्थन कर दिया और संस्कार बना लिये!

तो फिर अव्यक्त सिर्फ़ वो ही नहीं है जहाँ से हम आये हैं और वो अव्यक्त नहीं है जहाँ हमने जाना है। हम जीवन में भी बहुत सारी चीज़ों में अव्यक्त में रहते हैं। अव्यक्त उसे कहो जो हम देख नहीं सकते, जो हम जान नहीं सकते कि कैसे हुआ, क्यों हुआ! जो

प्रेय पथ पर जाते हैं वो तो यह सच्चाई देख नहीं सकते। उनको तो यह बात दीख भी नहीं सकती। उन्हें लाख समझा लो, वो कहेंगे, 'यह फिज़ूल सी बातें मुझे समझ नहीं आतीं। मुझे क्या ज़रूरत पड़ी है इन्हें समझने की!'

लेकिन उनके पास कैसी विद्वता होगी, कुशाग्रता होगी, कैसी बुद्धि होगी जो इस अव्यक्त तक पहुँच सकें। पहले होती है बुद्धि, फिर उसका विकास हुआ, उसके बाद विवेक होता है। ऐसा विवेक कहाँ मिले जो हमें मजबूर कर दे कि हमने अव्यक्त को जानना है। अगर इसको जानना है तो आप श्रेय पथ की तरफ़ चल दिये।

अब देखना यह है कि सारी उम्र में हमारे पास व्यक्त के लिये कितना समय है? बहुत समय तो हम सो कर गँवाते हैं। एक दिन में कितने घण्टे हैं जो हम आवश्यक काम करने में लगा देते हैं। कुछ खाने पीने में लगा देते हैं और कुछ सोने में लगा देते हैं।

खाना, पीना, सोना और अपने नित्य कर्म इत्यादि करने में कितना समय हम लगाते हैं। बाक़ी समय में से बहुत सारा समय हमारा अव्यक्त में रहता है। तो हम व्यक्त में कितनी देर रहते हैं? हिसाब लगा कर देखें। दिन में हम कितनी देर अपनी बुद्धि को अलग करके दूर से देखते हैं? अव्यक्त में रहने वाला कहता है, 'अरे ये मेरे साथ क्या हो रहा है। मेरे पीछे तो चोर पड़ गये हैं! यह बात क्या हुई?'

जब उसको यह बात समझ आती है तो वो कहता है, 'मैं नित्य और अनित्य में भेद जानना चाहता हूँ। मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह है क्या? ऐसा क्यों हो रहा है?'

- वो अपनी चित्त वृत्तियों को देखना चाह रहा है और उनको क़ाबू में लाना चाह रहा है...

- वो अव्यक्त को देखना चाह रहा है और अव्यक्त को क़ाबू में लाना चाह रहा है...

वो कहता है, 'अधिकांश समय तो जीवन में भी अव्यक्त है जब मैं कहता हूँ कि मैं जागता हूँ। बाक़ी समय मेरा सोने में चला जाता है।'

'मेरा तो व्यक्त असल में जो है जिसको मैं जानता हूँ, वो तो बहुत थोड़ा रह गया। १०० साल की उम्र में २५ साल भी न रह गये! एक चौथाई रह गया। इस एक चौथाई के लिये मैं उम्र के तीन चौथाई को गँवा दूँ... ये क्या बात हुई? मैं जानना चाहता हूँ, कौन हूँ मैं, कहाँ से आया हूँ और मैंने कहाँ जाना है.... और इस समय भी मैं क्या हूँ?'

जब वह जानना चाहता है तो वह चित्त की वृत्तियों को देखने के प्रयत्न करता है। परन्तु व्यक्त नहीं, वह अव्यक्त की तरफ़ जा रहा है। व्यक्त उसके लिये चिन्ह हैं। उन चिन्हों से वह पीछे जाना चाह रहा है।

इसलिए कहते हैं, 'go the way you came'! ❖

# आई पंथी सगल जमाती
# मनि जीतै जगु जीतु।

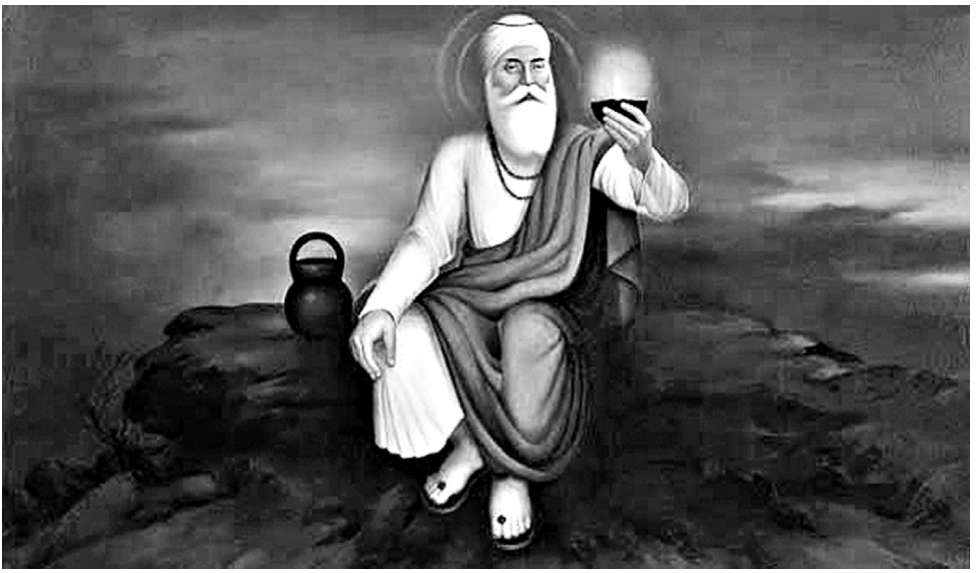

*गतांक से आगे-*

*पौड़ी २८*

*मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली*
*धिआन की करहि बिभूति।*
*खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति।*
*आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु। आदेसु तिसै आदेसु।*
*आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु।।२८*

***शब्दार्थ :*** सन्तोष की मुँदरा अर्थात् कुण्डल, लज्जा का खप्पर तथा झोली लेकर ईश्वर ध्यान की विभूति को मल लो। इस शरीर को पवित्र करके (विकारों से मुक्त करके) मृत्यु की कफ़नी में लपेट लो अर्थात् हर समय मृत्यु को अपना साक्षी बना कर साथ रखो। श्रद्धा से परमात्मा में जुड़ना ही डंडा है। सब को अपना साथी अर्थात् मित्र समझना, यही 'आई पंथ' है उस परमात्मा तक पहुँचने की राह है। मन को जीतना ही जगत को जीतना है। उसको नमस्कार है, नमस्कार है, जो आदि है, रंग रहित है, आदि रहित तथा नाश रहित है और युगों-युगों में एकरूप है।

***पूज्य माँ :***

*संतोष के कुण्डल पहरे हों, लाज शर्म की झोली हो।*
*प्रभु ध्यान की लगे विभूति, मौत की कफ़नी पहरी हो।।१।।*

*कुमारी सा पावन हो तन, श्रद्धा ज्ञान की लाठी हो।*
*पूर्ण जग ही कुल भये, मन जीते जग जीत हो।।२।।*

*यही आदेश मेरे प्रभु का जानो, जन्म जन्म का पति है जो।*
*अनादि आदि अनन्त अविनाशी, नित्य एको जस रूप ही हो।।३।।*

*आदेश मेरे प्रभु का, जन्म जन्म का मीत है जो।*
*एको सत् इक कर्तार, अखण्ड नित्य अविनाशी वो।।४।।*

*कैसे जानूँ कैसे जानूँ इसे, मेरे नानक आज तुम ही कहो।*
*सन्तोष के कुण्डल गर पहरूँ, श्रवण नाम का तब ही हो।।५।।*

*लाज शर्म की झोली हो, विनीत भाव में जीवन हो।*
*दया करुणा इलज़ाम न लागे, ऐसे भाव में मन यह हो।।६।।*

*हर पल ध्यान तेरा लागे, विभूति ध्यान की धारे हों।*
*मौत भी पल पल याद रहे, अमर कफ़न हम डारे हों।।७।।*

*अमर कफ़न क्या नानका, मैंने तेरा नाम ही पहर लिया।*
*कुण्डल क्या अब कस पहरूँ, मैंने हृदय में तुमको पहर लिया।।८।।*

*रोम रोम में तू बैठा, ध्यान की बात ही कहाँ रही।*
*लाज कैसी लाज करूँ, अब याद तेरी ही रही।।९।।*

*सन्तोष करूँ किस बात का, यहाँ 'मैं' की बात ही नहीं रही।*
*तू है मालिक साहिबा, बस तेरी बात ही बाक़ी रही।।१०।।*

*मौत की कफ़नी क्या पहरी, यम सम्मुख नित ही रहे।*
*मृत्यु निश्चित आयेगी, हर पल यह तो नित्य कहे।।११।।*

*जो पल जाये वह यही कहे, 'मैं लौट के कभी न आऊँगा'।*
*हर पल तन भी यही कहे, 'मैं रूप बदलता जाऊँगा'।।१२।।*

*कहे 'मैं साथ न दे सकूँ, कितना मैं साथ निभाऊँगा।*
*मसान पे मुझे जाना है, मैं तो निश्चित वहाँ पे जाऊँगा'।।१३।।*

*सन्तोष इतना क्या करूँ, दीदार की करूँ मैं इन्तज़ार।*
*इतनी चैना मुझपे नहीं, अब कर सकूँ अपना एतबार।।१४।।*

*थोड़ा सा नाम मुझे मिल जाये, तेरे नाम का जाम भी मिल जाये।*
*पावन मन हो न भी हो, मुझे नाम का जाम जो मिल जाये।।१५।।*

*श्रद्धा की जो बात कहो, नाम में वह भी मिल जाये।*
*तेरे ज्ञान को अब मैं क्या करूँ, मुझे तेरा नाम जो मिल जाये।।१६।।*

*तू कहे एको है विधि, मन जीते जग को जीत ले।*
*मैं जानूँ जग कुल तेरा, मन तेरे चरण में जाये पड़े।।१७।।*

*गर मन तेरा हो जाये अब, दिले आगाह भी हो जाये।*
*दिव्य दृष्टिपूर्ण दिल हो, आवाहन तेरा हो जाये।।१८।।*

*तू एक है बस तू एक है, अनेकों भेस में एक है।*
*तब ही जानूँ मालिक मेरे, बस केवल तू एक है।।१९।।*

*गर हर ही रूप में तू ही मिले, हर नाम में अब मुझे तू मिले।*
*ध्यान में अब मुझे तू मिले, तब होये मौत में तू मिले।।२०।।*

*मौत जो हर पल याद रहे, तन बिछुड़े यह भी याद रहे।*
*एको फिर मेरा भाव रहे, हर जा पर तू आप रहे।।२१।।*

*फिर जानूँ जानूँ मालिक मेरे, हर भेस में आप ही तुम खड़े।*
*नानका मेरे मालिका, ओ बादशाह 'मैं' क्या कहे।।२२।।*

वह यह कह रहे हैं कि आदि, अनादि, अनन्त जो है, सब आत्मा है; इस की बात कह रहे हैं। वह कह रहे हैं कि सब राम हैं। पर उसको जानें कैसे? उसके लिये उन्होंने कहा है कि पावन हो जा। भगवान कहते हैं कि देखो! वह जो आत्म तत्व है, ब्रह्म है, एक ओंकार है, वह एक है, नित्य, शाश्वत, आत्म स्वरूप है, अखण्ड, अनादि तत्व है। उसको खण्डित नहीं कर सकते। यदि आत्मा को जानना है, तो मन जीतो। गर मन को जीत जाओगे, जग से कोई चाहना न रहेगी। जग में आपको मौत कभी नहीं भूलेगी, क्योंकि आपने मौत की कफ़नी पहर ली है। जीते जी हर चाहना को, हर रसना को, हर माँग को आपने पी लिया है और गिरेबान सी लिया है। फिर आप दुनिया से कुछ नहीं माँग सकते।

***श्रीमती देवी वासवानी :*** इसे ज़रा और समझाइये।

***परम पूज्य माँ :*** इससे क्या होगा कि सारी दुनिया आपका कुल बन जायेगी, आपका समाज बन जायेगी। मन में कोई भेद-भाव न रहेगा। जब तक आप अपने को अलग समझते हैं, तब तक दुनिया में अलग-अलग हैं, लेकिन जब हमने भगवान को मौत के साक्षित्व में याद किया, तो मौन स्वरूप, अखण्ड एक ही रह गया। फिर सारा संसार उसमें आ जाता है। फिर मन जीता गया। उसके बिना मन कैसे जीतें? भगवान यही बता रहे हैं कि :

*अखण्ड विज्ञान रूप एक, अखण्ड दिव्य प्रकाश एक।*
*अखण्ड ओंकार एक, अखण्ड अविनाशी तत्व एक।।१।।*

*दिव्य विशुद्ध आत्म हो एक, परम तत्व स्वरूप एक।*
*परम पुरुष परमात्म एक, तत्व रस सार ओंकार एक।।२।।*

*नित्य सत्य नित्य अध्यात्म, नित्य भाव अनन्त एक।*
*अविनाशी अक्षर वह एक, सनातन अजर अमर वह एक।।३।।*

*निर्विकार निराकार वह एक, रूप में लागे वह अनेक।*
*पर वास्तव में, वह केवल एक।।४।।*

*मृत्यु जिस पल आ घेरे, हर रूप जा तत्व मिले।*
*तत्व तत्व में खो ही गये, बाक़ी एक ही रह जाये।।५।।*

*अखण्ड मौन ही रह जाये, अद्वैत तत्व ही रह जाये।*
*और कछु न रह पाये, वहाँ केवल नानक रह जाये।।६।।*

वह यह कह रहे हैं :-

*अविच्छिन्न वह अद्वितीय वह, अखण्डनीय वह आप है।*
*नाम रूप में बिखरा सा, पर सत्त्व सार इक आप है।।७।।*

*नूरानी वह तत्व ज्ञान, परवरदिगार इक आप है।*
*लाखों रूप धरी उतरे, पर रूप के पाछे आप है।।८।।*

*वह एक ही है इक कर्तार, एक ही मालिक आप है।*
*अपना आप ही वह जाने, कर्ता रचयिता आप है।।९।।*

*जब लौ मन बहु बातें कहे, जा जा पे यह संग करे।*
*वह नाम रूप के पाछे जो, सत्त्व वह नहीं देख सके।।१०।।*

*गर पल में मन मौन भये, उस पल मौन में देख वह ले।*
*मौन होई के वह समझे, अखण्ड मौन ही एक रहे।।११।।*

उसके बिना वह क्या समझेगा?

*सनातन वह अनन्त वह, विनाश रहित वह आप है।*
*अमर वह अपार वह, असीम सीमित आप है।।१२।।*

*अप्रकट वह है हुआ प्रकट, देख कैसा दिलदार है।*
*चरण में बैठ के पता लगा, मुझे एक उसी से प्यार है।।१३।।*

*ओ नानका मेरे मालिका, वह आत्म तत्व तू आप है।*
*वह निराकार निर्विकार आप, अखण्ड सत्त्व तू आप है।।१४।।*

*तू रूप धरा और मुझे कहा, मैंने सुन लिया तू आप है।*
*आज तुझे मैं कहती हूँ, तू मेरा मालिक आप है।।१५।।*

*ध्यान की बातें क्या समझूँ, मैं मौन की बातें क्या कहूँ।*
*पावन मन कस होता है, अब नानक मैं तुझे क्या कहूँ।।१६।।*

*शास्त्र नहीं कोई ज्ञान नहीं, मैं ज्ञान की बातें क्या करूँ।*
*सन्तोष में बैठ के क्या करूँ, मैं तो नाम ही तेरा पुकारा करूँ।।१७।।*

*पूर्ण जग है नाम तेरा, मैं बातों में अब क्या कहूँ।*
*मन जीते जग जीत है, यह भी समझ के क्या करूँ।।१८।।*

*तेरा आदेश मान लिया, बस एक है तू यह जान लिया।*
*नानक मेरे बादशाह, तेरे चरण पड़ी के जान लिया।।१९।।*

*जब लौ 'मैं' था न समझे, तेरे चरण रहे तो जान लिया।*
*मेरी हस्ती नहीं रही, चरण रज होई के जान लिया।।२०।।*

ओ नानका! मेरे मालिका! अब तो जान गये।

*क्रमशः*

# गर कर्ता भगवान हैं,
# तब सब सत् है!

*तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः।*
*प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम्।।*

*श्रीमद्भगवद्गीता १७/२४*

**भगवान कहते हैं कि अर्जुन, क्योंकि 'ओम् तत् सत्' में ही परम तत्व निहित है, इस कारण,**

**शब्दार्थ :**
**१. ब्रह्म का कथन करने वालों की,**
**२. यज्ञ, तप और दान की क्रियायें,**

३. **शास्त्र विधिवत्,**
४. **सर्वदा ओम् के उच्चारण से,**
५. **आरम्भ होती हैं।**

**तत्व विस्तार :**

ओम् का उच्चारण :

नन्हीं जान्! पूर्ण की पूर्णता को जानने वाले लोग जब विधिवत् यज्ञ, तप, और दान की क्रियाओं को करते हैं, तब सर्वप्रथम 'ओम्' कहते हैं, क्योंकि :

१. पूर्ण ओम् ही है, यह वे जानते हैं।
२. पूर्ण ब्रह्म ही है, यह वे जानते हैं।
३. ओम् कह कर वे, हर क्रिया ब्रह्म को अर्पित करते हैं।
४. ब्रह्म का मानो साक्षित्व उपलब्ध करते हैं।
५. ब्रह्म का मानो आह्वान करते हैं।
६. ब्रह्म का मानो स्तुवन करते हैं।
७. ब्रह्म का उदाहरण सम्मुख धरते हैं।
८. ब्रह्म के समान यज्ञ, तप, दान करते हैं।

***ब्रह्म अर्पित कर्म :***

गर सब ब्रह्म का जान कर काज क्रिया करो तो :

क) वह निष्काम हो जायेगी।
ख) आप कामना अर्थ काज नहीं कर पाओगे।
ग) आप फल की चाहना पर ध्यान नहीं दोगे।
घ) दक्षता और भी बढ़ जायेगी।
ङ) सावधानी भी बढ़ जायेगी।
च) दम्भ, दर्प, अहंकार छू भी नहीं पायेंगे।
छ) हर क्रिया श्रद्धापूर्ण हो जायेगी।
ज) तब ही तो आप पाप विमुक्त हो पायेंगे।
झ) तब ही तो उनमें कर्तृत्व भाव गौण हो जायेगा।
ञ) तब ही तो उनमें भोक्तृत्व भाव गौण हो जायेगा।
त) तब ही तो उनमें यज्ञ, तप, दान पावन हो जायेंगे।

नन्हूँ! यदि ओम् का उच्चारण न भी करो, तब भी यदि ये जान ले कि सब ब्रह्म ही हैं, तो काफ़ी है, क्योंकि ओम् का उच्चारण केवल ब्रह्म की पूर्णता याद रखने के लिए किया जाता है।

***उदाहृत्य :***

यहाँ उदाहृत्य का अर्थ 'उच्चारण' किया गया है।

उदाहृत्य का अर्थ है :

१. प्रकथन करना,
२. वर्णन करना, दृष्टान्त देना, स्तुति गान करना।
३. याद करके और उसे हक़ीक़त मान कर जीवन में कार्य आरम्भ करना।

नन्हूँ! जीव ओम् के पहले तीन पड़ाव कृष्ण, राम, या ओम् के आसरे पार करता है, तत्पश्चात् नामी के नाम में वह स्वयं खो जाता है। तब मानो उसका अपना नाम नहीं रहता, उसके तन का नाम भगवान वाला हो जाता है। फिर जब उसका तन, मन, बुद्धि सम्पूर्ण अंगों सहित तथा सम्पूर्ण सांसारिक समिधा सहित भगवान के हो जायें, तब वह मौन हो जाता है। नन्हूँ! तब वह नाम भी किसका ले? लोग कहें, तो वह राम राम भी करता है किन्तु स्वयं अपना नाम कैसे ले?

*तदित्यनभिसंधाय फलं यज्ञतपःक्रियाः।*
*दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः ।।*

*श्रीमद्भगवद्गीता १७/२५*

**भगवान कहते हैं :**

**शब्दार्थ :**

**१. 'तत्' ऐसा कह कर,**
**२. मोक्ष चाहने वाले पुरुषों द्वारा,**
**३. फल की चाहना का ध्यान न करते हुए,**
**४. नाना प्रकार के यज्ञ, तप, दान की क्रियायें की जाती हैं।**

**तत्व विस्तार :**

'तत्' से ब्रह्म की ओर संकेत है। तत् जैसे कह आये हैं, ब्रह्म का नाम है, और ब्रह्म की ओर संकेत करता है। तत् का अर्थ है, सब वही है, सब उसी का है। जब जीव कर्मफल नहीं चाहता, तब वह वास्तव में कर्मफल भगवान पर छोड़ देता है।

***तत् का रूप :***

यानि,

१. सब उसी का जान कर वह भगवान के अर्थ कर्म करता है।
२. ब्रह्म का चाकर बन कर कर्म करता है।
३. सब काज कर्म और परिणाम उसी के हैं और उसी के लिये हैं, यह जान लेता है।
४. वह अपने आपको निमित्त मात्र जानता है और मानता है।

मेरी नन्हूँ जान् :

'तत्' नित्य साक्षी के रूप में साथ रहे तो ही मुक्ति मिल सकती है।

कमला! ऐसे लोग,

- सब उसी का है,
- सब वही है,
- ये मानते हैं।

जीवन में इसका अभ्यास करते हुए वे भगवान का नाम लेते हैं। किसी भी कार्य को करने से पहले 'सब उसी का है', जानते हुए वे तत् कहा करते हैं।

क) जो लोग 'मैं' अर्थ छोड़ना चाहते हैं।
ख) जो लोग स्वार्थ, अहंकार, मिथ्यात्व, मोह सब छोड़ना चाहते हैं,

वे जीवन में सब कुछ ब्रह्म का जान कर करते हैं।

यानि, जो लोग असत् से मुक्त होना चाहते है, वे 'तत्' कह कर :

१. जीवन परम में अर्पित करते जाते हैं।
२. जीवन में परमेश्वर परायण काम करते जाते हैं।
३. जीवन भर परम की चाकरी करते हैं।
४. वे अपने तन को भी भगवान के हवाले करते जाते हैं।
५. वे अपने मन से संग छोड़ने के यत्न करते हैं।

वे मुक्ति चाहुक लोग, तन, मन, बुद्धि, को भगवान का जानकर जीवन में यज्ञ, तप, दान करते हैं।

*सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते।*
*प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते।।*

*श्रीमद्भगवद्गीता १७/२६*

**शब्दार्थ :**

**१. हे अर्जुन ! सद्भाव और साधु भाव में,**
**२. 'सत्', इस नाम का प्रयोग किया जाता है,**
**३. तथा उत्तम कर्म में भी 'सत्',**
**४. शब्द का प्रयोग किया जाता है।**

**तत्व विस्तार :**

नन्हीं! श्रेष्ठ कर्म को ही सत्कर्म कहते हैं। 'सत्' ही ब्रह्म का नाम है। यह सत् का शब्द :

क) सद्भाव प्रकट करते हुए प्रयोग करते हैं।
ख) दैवी सम्पदा पूर्ण साधुभाव प्रयोग करते हैं।
ग) दैवी सम्पदा बहाव के परिणाम रूप काज में इस्तेमाल करते हैं।
घ) 'सत्' श्रेयस्कर कर्म में इस्तेमाल करते हैं।
ङ) 'सत्' उत्तरायण पथ पथिक के जीवन में इस्तेमाल करते हैं।
च) 'सत्' निष्काम कर्म में इस्तेमाल करते हैं।
छ) जब केवल 'सत्' में जीना चाहें, तब सत् कहते हैं।
ज) 'बस जो है वही है, यही हक़ीक़त है', सत् वाले इसी भाव में रहते हैं।
झ) जो शास्त्र में कहा है, वही हक़ीक़त है, सत् वाले यह कहते हैं।

देखो भाई!

१. 'सत्' शब्द का प्रयोग सत् अभ्यास के कारण होता है।
२. सत् प्रधान जीवन बसर करने के लिये सत्य को नित्य याद रखते हैं, तब इस शब्द को कहते हैं, जो मानो सत् की याद दिलाता है।
३. ज्यों भगवान का नाम लेकर जीव भगवान का साक्षित्व चाहता है; त्यों सत् का नाम लेकर जीव सत् में टिकना चाहता है।
४. किसी काज कर्म को करते समय भी उन्हें सत् की विस्मृति नहीं होती।
५. नित्य 'सत्' कह कर वह सत् के मानो निहित अर्थ का आह्वान करते हैं।

समझना है तो तुम ऐसे समझ लो कि :

***ओम् :***

१. ब्राह्मण कहते हैं।
२. ब्रह्मवित तथा ब्रह्मनिष्ठ कहते हैं।
३. सिद्ध गण कहते हैं।

***सत् :***

साधक कहते हैं,

१. जब कर्मफल त्याग का अभ्यास करते हैं,
२. जब भागवत् अर्पित होने का अभ्यास करते हैं।
३. यह श्रद्धा और विश्वास-वर्धक है।
४. यह तन, मन, बुद्धि को अर्पण करने में सहायक है।

***सत् :***

क) सद्भावना उत्पत्ति अभ्यास के समय सत् कहते हैं।

ख) सत् सद्भावना कर्म अभ्यास में सहायक है।

ग) सत् असत् विवेक में सत् सहायक है।

घ) हक़ीक़त देखने में सत् सहायक है।

ङ) श्रेय पथ के अनुसरण में सत् सहायक है।

बार बार सत् कह कर साधक सत् की तलाश करता है, सत् का अभ्यास करता है।

१. जब सत्भाव आयेगा, तब साधुता का वर्धन होगा।

२. जब सत्भाव आयेगा, तब दैवी गुण का वर्धन होगा।

३. जब सत्भाव आयेगा, तब कर्तव्य परायणता उत्पन्न होगी।

४. तत्पश्चात् ही तो प्रशंसनीय कर्म होंगे।

५. तत्पश्चात् ही तो उत्तम कर्म होंगे।

इसे समझना है तो यूँ समझ लो :

सत् से, 'जो है, वह है', ऐसा भाव उत्पन्न होता है।

तत् से 'जो है, तुम्हारा है', ऐसा भाव उत्पन्न होता है।

ओम् से 'पूर्ण तुम ही हो', ऐसा भाव उत्पन्न होता है।

***यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते।***
***कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते।।***

*श्रीमद्भगवद्गीता १७/२७*

**ध्यान से सुन! भगवान कहते हैं :**

**शब्दार्थ :**

**१. यज्ञ, तप और दान में स्थिति,**

**२. वह सत् है, ऐसा कहा जाता है**

**३. और कर्म, जो उसके अर्थ किया जाता है,**

**४. वह भी सत् है, कहा जाता है।**

**तत्व विस्तार :**

सत्

अब भगवान स्पष्ट सत् की स्थिति कहते हैं कि सत् क्या है।

***यज्ञ, तप, दान स्थिति :***

१. यज्ञ, तप और दान भी सत् की स्थिति है।

२. जहाँ तप और दान नहीं, वहाँ सत् की स्थिति नहीं है।

३. जो भी कर्म यज्ञ, तप और दान के निमित्त किया जाये, वह सत् ही है।

४. जीवन यज्ञमय बनाना ही सत् है।

५. प्रेम का अभ्यास ही तप है और यही सत् है।

६. तन दूसरे व्यक्ति की सेवा में लगाना ही महा दान है, यही सत् है।

यज्ञ, तप, दान अनेकों बार समझा आये हैं। यहाँ तो इतना ही कहना है कि इनके सिवा सत् कुछ भी नहीं।

यज्ञ, तप और दान,

क) साधक का धर्म है।

ख) जीव का कर्तव्य है।

ग) जीवन का आधार है।
घ) सुख का द्वार है।
ङ) यज्ञ, तप, दान में ही अपार आनन्द है।
च) यज्ञ, तप, दान में भगवान का नाम है।
छ) यज्ञ, तप, दान में भगवान का प्रमाण और विधान है।
ज) यज्ञ, तप, दान नाम का परिणाम है।

यज्ञ, तप, दान अर्थ जो भी करो, वह कर्तव्य है, वही सत् है।

- इन्हीं के राही जीव पावन होता है।
- इन्हीं के राही जीव का चित्त शुद्ध होता है।
- यही साधना की सत्यता का प्रमाण है।
- यही साधक की सत्यता का रूप है।

यज्ञ, तप, दान दृष्टि में वास करते हैं, हृदय से उठते हैं। भगवान ने जीव का जीवों से सम्बन्ध सहज ही बनाया है। पारस्परिक सम्बन्ध उज्ज्वल तथा सुखमय रखने के लिए यज्ञ, तप, दानमय दृष्टिकोण अनिवार्य है।

देखो कमला !

क) दान, तन राही सेवा है।
ख) तप, मन राही दूसरे की हर बात को सहना है।
ग) यज्ञ, अहंकार, दम्भ, दर्प, मोह, मेरापन का त्याग है। यही जीव में सुख और शाश्वत आनन्द का आधार है।

***अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।***
***असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह।।***

*श्रीमद्भगवद्गीता १७/२८*

**भगवान कहते हैं, हे अर्जुन!**

**शब्दार्थ :**

**१. अश्रद्धा से जो आहुति दी हो,**
**२. अश्रद्धा से दान जो दिया हो,**
**३. अश्रद्धा से तप तपा हुआ,**
**४. और जो कुछ भी किया होता है,**
**५. वह असत् है, ऐसा कहते हैं।**
**६. वह कर्म न ही मर कर,**
**७. और न इस जन्म में लाभदायक होता है।**

**तत्व विस्तार :**

श्रद्धा रहित कर्म असत्,

भाई! 'ओम् तत् सत्' यदि श्रद्धा सहित कहते हो तो तत्पश्चात् जो भी करो, वह सत् है। गर श्रद्धा नहीं तो जो भी करो वह असत् है।

कमला! इस बात पर ज़रा ध्यान लगा कर समझ ले!

क) **गर कर्ता भगवान हैं तब सब सत् है।**
ख) यानि जब कर्तृत्व भाव अभाव से कोई कर्म करो, तो वह सत् है।
ग) जब भागवत् परायण होकर, भगवान के लिए कर्म करो तो वह सत् है।
घ) अपने आप को भूल कर कर्म करो तो वह सत् है।

***श्रद्धा :***

श्रद्धा 'ओम् तत् सत्' में होनी चाहिये। यानि, श्रद्धाः

१. ब्रह्म में चाहिये।
२. परम के स्वभाव में चाहिये।
३. पूर्ण ओम् ही है, इसमें चाहिये।
४. सद्भावना, साधुभाव भगवान के हैं,

सद्भावना साधुभाव ही तप है, इनमें भागवद् नाम कवच है। सद्भावना, साधुभाव ही तप के आधारभूत हैं। ये तब ही उत्पन्न हो सकते हैं जब 'सब वही है' इसमें श्रद्धा हो।

५. श्रद्धा में यज्ञ, तप, दान निहित रहते हैं और यज्ञ, तप, दान का आधारभूत श्रद्धा है।
६. श्रद्धा ही वह पात्र है जिसमें साधक भगवान का प्रेम ग्रहण करता है।
७. श्रद्धा में वह बल है, जिसके राही साधक सब कुछ ग्रहण करता है।
८. श्रद्धा ही भगवान का आह्वान करती है।
९. श्रद्धा के ही पलने में भगवान पलते हैं।
१०. श्रद्धा ही वह अन्न है जिसे खाकर देवत्व पुष्टि पाता है।
११. श्रद्धा ही वह औषध है जो मानसिक आहार पावन करती है।
१२. श्रद्धा ही वह औषध है जो बुद्धि को स्थिर कर देती है।

भाई! श्रद्धा ही जीव को असुरों से इन्सान बनाती है।

- श्रद्धा ही जीव को इन्सान से देवता बनाती है।
- श्रद्धा ही जीव को देवता से भगवान बनाती है।
- श्रद्धा सहित जो भी किया हो, वह सत् ही किया होता है।
- श्रद्धा रहित जो भी किया हो, वह असत् ही किया होता है।

ध्यान रहे कमला! ज़रा सावधान होकर सुन!

आपमें क्या श्रद्धा है, इसे जानने के लिये,

क) यज्ञ, तप, दान ही प्रमाण हैं।
ख) स्थिर बुद्धि, प्रेम तथा तनोदान प्रमाण हैं।
ग) गुणातीतता श्रद्धा का परिणाम है।
घ) गुणातीतता श्रद्धा का प्रमाण है।
ङ) गर तेरी श्रद्धा सच्ची है, दैवी गुण तुझमें से बहेंगे ही।
च) कर्तव्य परायणता श्रद्धा का प्रमाण है।
छ) सुख, मनो व्याकुलता का अभाव, अपने प्रति उदासीनता, सभी श्रद्धा के प्रमाण हैं।
ज) मान-अपमान में समचित्तता श्रद्धा का परिणाम है।
झ) योग की सफ़लता श्रद्धा का वरदान है।

यह श्रद्धा ही सत् का आधार है,
और सत् ही श्रद्धा की पुकार है।

यह सत् ही श्रद्धा का स्वरूप है,
और सत् ही श्रद्धा का रूप है।।

अश्रद्धा से जो भी करो, असत् है। भगवान के नाम पर जो भी करो सत् है। यदि श्रद्धा न हो तो जो भी किया जाये, वह अन्त में न तो इस जन्म में ही सुख देता है और न ही अगले जन्म में ही सुख देने वाले फल देता है।

नन्हूँ!

- श्रद्धा रहित कर्म व्यर्थ हैं।
- श्रद्धा रहित कर्म सफ़लता रहित होते हैं।
- श्रद्धा रहित कर्म आन्तर दुःख के बीज बन जाते हैं।

❖ ❖ ❖

# अनेक रूप वह माटी धरे,

# माटी माटी ही रह जाये

*यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्यामोषधयः सम्भवन्ति।*
*यथा सतः पुरुषात्केशलोमानि तथाक्षरात्सम्भवतीह विश्वम्।।७।।*

*- मुण्डकोपनिषद्, प्रथम मुण्डक - प्रथम खण्ड, ७ श्लोक*

**शब्दार्थः**

जिस प्रकार मकड़ी जाल बनाती है और निगल जाती है तथा जिस प्रकार पृथ्वी में नाना प्रकार की औषधियाँ उत्पन्न होती हैं और जिस प्रकार जीवित मनुष्य से केश और रोंएं उत्पन्न होते हैं उसी प्रकार अविनाशी परब्रह्म से यहाँ इस सृष्टि में सब कुछ उत्पन्न होता है।

**तत्व विस्तारः**

त्रि उपमा वह दे करी, एको बात सुझाते हैं।
स्वतः ही यह जग घुमड़ पड़े, सार यही सुझाते हैं।।१।।

बिन अन्य के आसरे, ब्रह्म उत्पत्ति रे करे।
आप ही आपके आसरे, आप में ही उत्पन्न करे।।२।।

प्रथम उत्पन्न आप से हो, आप में ही पुनः लय होये।
दूजे से कहें आप सों ही, आप में ही स्थित होये।।३।।

तीजे में उत्पन्न आप से हो, जड़ उत्पत्ति जड़ ही रहे।
त्रि उपमा वह दे करी, उत्पत्ति की कह चुके।।४।।

उसको कुछ भी नहीं होये, भेद कहीं पे न आये।
सब आप करे सब आप भये, फिर भी बदल वह न जाये।।५।।

मकड़ी आन्तर सों ही जो, तंतु रे उगलती है।
अपने अंश सों ही तो वह, बाह्य जाल बनाती है।।६।।

पुनः जाल सम्पूर्ण वह, अपने में पचाती है।
उसी विधि परम सों ही, उमड़ उमड़ रे आती है।।७।।

बनस्पत उपजे भूमि सों, पुनः वहीं रे लय होये।
**अनेक रूप वह माटी धरे, माटी माटी ही रह जाये।।८।।**

उसी विधि ब्रह्माण्ड यह, ब्रह्म तत्व सों उत्पन्न हो
अखण्ड तत्व वह एकरस, अनेकत्व जो देखे हो।।९।।

माया जाल बिछा करके, महा विस्तृत हो जाती है।
पुनः उसी में लय हुई, महा विस्तृत हो जाती है।।१०।।

*लोम लोम जीवित तन में, उत्पन्न जिस विध होते हैं।
जड़वत् उपजें और बढ़ें, मृतकवत् ही होते हैं।।११।।

विविध उदाहरण दे करी, विश्व उदय की कहते हैं।
अव्यक्त व्यक्त किस विध हो, उपमा देकर कहते हैं।।१२।।

मकड़ी सों जाला निकसे, विकृत रूप उसी का है।
सार जाल का मकड़ी है, भक्षे जाल जो उसका है।।१३।।

* लोम लोम = रोम रोम

उसी विधि इस जग का, एक आधार परम रे है।
पूर्ण जग का जान ले, एक सार परमात्म है।।१४।।

जाला अंग वा आपुनो, आप से ही बनाये है।
जब चाहे वह जाल उठा, अपने में ही समाये है।।१५।।

अपने कारण आपुनी, तुष्टि कारण सब रचे।
परमात्म बिन चाह के, तुष्टि कारण नहीं रचे।।१६।।

इस कारण दूजी रे, उपमा यहाँ पर देते हैं।
पृथ्वी औषध जन्म दे, बिन प्रयोजन देते हैं।।१७।।

चाह रहित संग रहित, बिन प्रयोजन सब रचे।
ज्यों पृथ्वी पर जान ले, बनस्पत नित नव उगे।।१८।।

जो बीज पड़े वह उमड़ पड़े, पृथ्वी आप ही रूप धरे।
पाना न पाना कुछ भी नहीं, बिन प्रयोजन सब भये।।१९।।

कर्म बीज तू जान ले, स्वतः ही उमड़ते हैं।
पृथ्वी संग सों चाहे कहो, अनेकों रूप वह धरते हैं।।२०।।

कोई यत्न नहीं वा ने किया, आप सों आप ही उभर पड़े।
जैसा जिसका बीज रे था, रूप धरी वही उभर पड़े।।२१।।

चेतन सत्ता जीवित तन में, केश विधि यह उभर पड़े।
तन विलक्षण अनुभव रहित, तन से तो रे उभर पड़े।।२२।।

स्वतः उमड़ वह आते हैं, आप सों आप ही उमड़े हैं।
किया लेशमात्र प्रयास नहीं, चेतन तन में उमड़े हैं।।२३।।

उसी विधि उस परम सों, जग उभर रे आता है।
बिन प्रयोजन यत्न के, विस्तृत यह हो जाता है।।२४।।

बिन उद्देश्य बिन चाह के, कर्म बीज रे रूप धरे।
बिन यन्त्र बिन प्रयोजन, आप में आप ही सब भयें।।२५।।

पूर्ण जग का निमित्त वह, उपादान कारण है वह।
आप रचे और आप भये, करे सब धारण है वह।।२६।।

जड़ चेतन स्थावर जंगम, कहें रे बस इक वह ही है।
अखण्ड रस अनेक रूप, एक सत्त्व बस वह ही है।।२७।।

अद्वैत तत्व की बात कहें, विभाजित सा हो जाता है।
अनेक रूप में दर्शाये, दो भी नहीं हो पाता है।।२८।।

पुनः स्वप्न की बात कहूँ, मन मेरे तू समझ ले।
स्वप्न में अनेक भये, जागे तो बस एक रहे।।२९।।

परम चेतन वह एको है, कबहुँ न वह दो होये।
अखण्ड जो है एको है, परम तत्व न दो होये।।३०।।

अपरा विद्या कह आये, स्वप्न की ही बताये है।
कहें रे कैसी भावना हो, दृश्य स्वप्न उमड़ आये है।।३१।।

स्वप्न में सब कुछ पा लिया, आपेक्षिक काल में पाये है।
परा ध्याये, सम्पूर्ण स्वप्न से उठ जाये है।।३२।।

वहाँ काल नहीं कोई लोक नहीं, दूजा कोई नहीं रहे।
स्वप्न खेल रे ख़त्म होये, एक एक बस एक भये।।३३।।

आनन्द स्वरूप ही रह जाये, अखण्ड रूप ही रह जाये।
जो समझ सके वह नहीं रहे, समझ परे की रह जाये।।३४।।

भोगी पक्षी का समझो, परम से मेल जो हो गया।
स्थूल जो तद्रूप था, तद्रूप सूक्ष्म हो गया।।३५।।

पूर्ण जग यह जान लिया, कारण जग का जान लिया।
महामौन वह पा जाये, जिसने मौन को जान लिया।।३६।।

यहाँ कहें इक कारण, पूर्ण जग का वह ही है।
विश्वरूप जो देख रहे, विश्वात्म बस वह ही है।।३७।।

पर साधक तू यह जान ले, वह हो कर भी है यह नहीं।
स्वप्न में क्यों भरमाया है, स्वप्न रूप यह नहीं।।३८।।

स्मृति चाह अतृप्त भाव, स्वप्न ज्यों रच आते हैं।
अनेक भोग्य भोगी को, स्वप्न में दर्शाते हैं।।३९।।

स्वप्न स्थिति अरे स्थिति है क्या, सोच स्वप्न में क्या धरा।
कहाँ रे स्वप्न लोक गया, जिस पल जागृत हो गया।।४०।।

उसी विधि अरे जग सारा, स्वप्न का ही खेल है।
जो जागा वह जान गया, अज्ञान का यह खेल है।।४१।।

वह निराकार अरे निर्भाव, निर्रूप रे तू ही है।
परम सत्त्व स्वरूप तेरा, अखण्ड रस रे तू ही है।।४२।।

स्वप्न का नट दृष्टा बिना, ज्यों रे कुछ भी है नहीं।
उसी विधि इस जग में, राम बिना कुछ है नहीं।।४३।।

अनेक विधि समझायें वह, भगवान बिना है कुछ नहीं।
उत्पत्ति उसकी रे कहें, पर उत्पत्ति है नहीं।।४४।।

मायिक जग की क्या रे कहें, माया खेल की क्या कहें।
स्वप्न में वह नटन् के, अंग मेल की क्या कहें।।४५।।

भ्रम रूप की बात कहें, क्योंकर भ्रम हो जाये।
देख रज्जू की रे कहें, सर्प जो दर्शा जाये।।४६।।

चलो मन यहीं पे रहने दो, जो है सब अब राम है।
हर रूप धरे फिर लय करे, करे सत्त्व रूप इक राम है।।४७।।

२४-८-६१

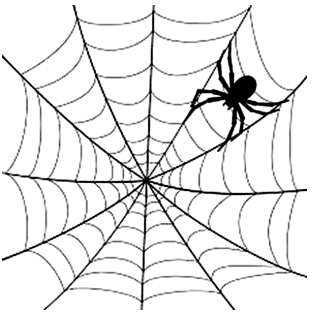

❖ ❖ ❖

# आपके क़दमों ने ही उस परम सत्य का निरूपण किया!

*श्रीमती पम्मी महता*

*परम पूज्य माँ एवं श्रीमती पम्मी महता*

आप, परम पूज्य परम वन्दनीय श्री हरि माँ प्रभु जी को मेरा शतः शतः प्रणाम! वक्त के चलते हे सद्गुरु माँ, सभी चलन जो आपके हैं, **आपके जो क़दम हैं, इन्होंने ही उस परम सत्य का निरूपण किया।**

आप सद्गुरु का द्वार ही सर्वोत्तम द्वार है। आप ही के श्री चरणन् में आप ही की करुण कृपा से 'मैं' मिटती है। सच कहा आपने, 'मैं' मिटाव ही साधना है!' आपका द्वार ही शुभ व मंगलमय द्वार है, जहाँ से निकल कर ही परम द्वार मिलता है! आप परम की कृपा का यह वरदान भी है और अनुपम आशीर्वाद भी! सच ही यह प्रेम का अद्भुत व विलक्षण द्वार है... जहाँ से जब आप ही की करुण-कृपा से पहुँचा लिये जाते हैं, तभी सभी प्रेममय हो जाता है! प्रभुमय हो जाता है!

भगवद् कृपा यूँ करुणापूर्ण हो कर मिलती है... सच माँ, जीव जगत आपसे यह अद्वितीय प्रसाद पा धन्य-धन्य हो जाता है। जीवत्व भाव से निकाल कर, आप हमारे सच्चे स्वरूप की, कि 'हम आत्मा हैं' इसकी पहचान भी दे देते हैं और आप स्वयं ही वहाँ तलक लिवा भी ले जाते हैं! जिन पर आपकी मेहर हो जाये, जिन पर आपका निगाहे-करम हो जाये, उसे परम सौभाग्य प्रदान कर देते हैं कि वह आपकी कृपा से ही आपके पाछे-पाछे चल पाते हैं... अद्भुत व दिव्य तथा अलौकिक लीला के दर्शन पाई हम धन्य-धन्य होते जाते हैं और आपका कोटि कोटि धन्यवाद करते हुये पुनः पुनः धन्यवाद में हाथ जुड़ जाते हैं!

कैसी अवस्था है, जहाँ एक बार सीस झुक गया तो फिर उठता ही नहीं! ऐसे दिव्य प्रसाद को पाकर हमें पता चलता है, कैसे हम अपनी ही अज्ञानता के जंजाल में फँस कर इस क़दर उलझ जाते हैं कि अपनी पहचान ही भूल जाते हैं... यूँ ही उलझनों में घिरे कितना अव्यवस्थित जीवन जीना शुरू कर देते हैं। सच कहा है कि सद्गुरु के बिन व उनकी कृपा बिन आप निःस्वार्थता के पथ पर नहीं आ सकते!

'मैं' से तो निजात पाना ही होगा। अपनी निजता को त्याग कर अपने प्रभु जी से तो जुड़ना ही होगा, वरना :

- कैसे जी पायेंगे आध्यात्मिक जीवन...
- कैसे निर्विकार व निःस्वार्थ जीवन जी पायेंगे...
- कैसे मैं, मम, मेरे के मोह से निकल पायेंगे...
- कैसे आंतर निर्दोष भाव से युक्त होगा व 'मैं' से मुक्त होगा...

इन सभी भावों का मिश्रित भाव आंतर को उद्वेलित करने लगता है। तड़प उठती है - क्या हम अपने से छलाव कर रहे हैं? क्या हम भ्रमित हुये हुये हैं? इस दुविधा में जीने से अच्छा है, अपने प्रभु माँ को सच्चे व सुच्चे मन से आर्त हो कर पुकार लें कि 'हे माँ! आप ही बताइये हमारे लिये श्रेयस्कर रास्ता कौन सा है..? गर पुकार सच्ची होगी तो भगवान स्वयं सद्गुरु का वेश धारण कर प्रकट हो जायेंगे! आशा निराशा के हिंडोले से उठा कर इस क़दर अपनी ही आग़ोश में समेट लेंगे कि जैसे आपके सारे दुःख-सुख समेट कर अँधेरों से उजालों की तरफ़ ले जाने को ही आये है...

कैसा आश्वासन देते हैं कि

- उसी में स्वयं को विसर्जित करने को जी चाहने लगता है...
- विश्वास करने को जी करता है...
- उनकी अखियों में प्रेम का सागर देख उसी में डूब जाने को मन करता है...
- अपने ही मन के विपरीत चलने की इच्छा जागृत हो जाती है...

कैसा सम्पूर्ण व्यक्तित्व सामने आ कर खड़ा हो जाता है कि उनके श्री चरणन् का स्पर्श करने को जी करता है...

इस मुहब्बत को क्या नाम दें, जो मुहब्बत हर नाम से ऊपर है! जिसे इबादत का दर्जा हासिल है! इसी मुहब्बत को जब भगवान जी का ही दूसरा नाम मान लिया तो किसी और नाम से नवाज़ भी कैसे सकते हैं!

माँ प्रभु जी का नाम आस्था का प्रतीक है। श्रद्धा के पलने में जन्मता व पलता है!

आपके मन को बुहारी बुहारी इस क़दर साफ़ कर लेते हैं कि आंतर का सारा पसारा बुहार कर बाहर कर देते हैं। कैसे काली को कर्मों वाली बना देते हैं! एक प्यारा सा अपना नाम लिख कर - जहाँ फिर उसी नाम की स्तुति वन्दना आप माँ स्वयं गाने लगते हैं। यह शब्द नहीं हैं, यह तो वह एहसास है, जिसे पल-पल महसूस किया जा सकता है...
हृदय वीणा पर यही प्रभु नाम बजने लगता है!

कैसे मीठे स्वरों में यह आंतर मन में गूँजने लगता है कि आंतर मन ही नहीं, आप भी पूर्णतया उसी गुंजार में जा शरीक़ हो जाते हैं। आप श्री हरि माँ प्रभु जी अपने ही मुखारविन्द से नाम की महिमा गाने लगते हैं! इस मधुर आवाज़ के प्रति मन खिंचा ही चला जाता है, हृदय आत्मविभोर हुआ आँसुओं की नमी से भीगा रहता है। अखण्ड नाम की धुन बज रही है, इसी का एहसास रोमांचित किये रहता है... इस दिव्य दैवी देन का आभास ही इतना मंत्र-मुग्ध कर देने वाला होता है कि इसके आगे कोई शै न तो प्रभावित करती है न ही ठहरती है।

बस आँखें मूँद कर भी, आँखें खोल कर भी, इसी नाम की गुंजार अभिभूत किये रहती है। कब सहर, शब में ढल जाती और कब एक नई सुबह उग आती! इसमें समय का मान ही कहाँ रहने दिया आप श्री हरि माँ प्रभु ने जब तलक नामी तक जाने का नाम आधार मेरे जीवन का सत्य नहीं बना दिया आपने!

नाम की महिमा रोम-रोम में व्याप्त हो गई... नाम रटन नहीं, राम भजन जीवन की व्याख्या है। तभी तो आत्मा का परमात्मा से मिलन होगा - क़दम-ब-क़दम आप इस हृदय आंतर में चलते ही चले गये जब तलक आपने इसे अपने द्वार पर नहीं ला धरा!

कितने अनथक क़दम चले आपके! आप हर हाल में मुझमें बाबस्ता रहे, जब तलक आप अपने द्वार तक इसे नहीं ले आये! आप ही आप मेरे साक्षी हैं कि कहीं भी इधर-उधर नहीं देख पाई। केवल दिखा तो आप ही का, हे विभूति पाद, श्री विग्रह दिखा और कोमल-कोमल भावनाओं का सामगान दिखा!

अपने इस द्वार तलक पहुँचाने की जो ज़िम्मेवारी आपने ले रखी थी, आपने पूरी कर दी। इसके लिये युगों-युगों तक आपकी ऋणी रहूँगी! ऋणी से आपका कहा याद आ गया... आपने कहा, "कभी न कहना कि कैसे ऋण उतारूँगी? क्योंकि ऋणी रहोगी तो ही तो आगे भी मिलते रहेंगे।" बहुत अच्छा लगा सुनकर कि कैसे-कैसे आप हसीन मोड़ दे देते हैं...

बहुत ही लाजवाब ढंग हैं आप माँ के! ईश्वर करे, आपके कहे हर शब्द की सुन्दरता मेरे हृदय में बनी रहे। जो अव्यक्त, व्यक्त सभी आपके श्री हरि चरणन् में धरते हुये सदा नत रहूँ और जीवन में इनका मोल पा सकूँ! आमीन!

आपने कहा हे माँ कि "द्वार तलक मैं ले आया हूँ अब आगे तुझे स्वयं चलना है!" अरे, बाबा रे बाबा! यह क्या कह दिया मेरो साई रब ने मुझे! यह तो वह बेला आई है जब अपने चले क़दमों को आप ही ने लौटाना है इस हृदय से... मैं कहाँ आ गई इस आपकी धरोहर में, आप ही बताइये!

मुझे चलने में न तो परहेज़ है, न ही गुरेज़... इतनी ही अनुनय-विनय है आपसे, हे श्री हरि माँ प्रभु जी कि आपके पदचिन्हों पे चलते हुये आप ही उसके साक्षी बने रहियेगा...

आपकी धरोहर को जीवन में धारण करने की उस बेला में मुझसे कोई भी क़दम वह न उठवाइयेगा जिसमें 'मैं' हो...

इस आपकी अनमोल धरोहर से श्रृंगारित रहूँ, मगर इसे छू कर व अपना कर अपमानित न होने दूँ...

जो आपकी अमानत है, उसे अपनी ही बनी रहने दीजियेगा!!

आपका सच्चा नाम जपन यही होगा मेरे लिये, क्योंकि जब तलक आप इस हृदय से अपने क़दम नहीं लौटायेंगे आपके परम धाम में कैसे आ पाऊँगी आप ही बताइये? माँ प्रभु जी, मुझे आपकी मुकम्मलता में आना है, इस लिये आप ही से करबद्ध प्रार्थना है मेरी कि अपने ही दिये क़दमों को लौटा लीजियेगा - यही मेरी अनुनय-विनय भी है आप से और प्यारा-प्यारा अनुरोध भी! हरि ओऽम्

❖ ❖ ❖

# श्रद्धा - ब्रह्म विद्या का आधार

*परम पूज्य माँ एवं उनके पिता जी श्री सी एल आनन्द*

**पिता जी -** उपनिषद् में **श्रद्धा और विश्वास को ब्रह्म विद्या का आधार** कहा है परन्तु श्रद्धा और विश्वास अन्धे भी तो हो सकते हैं यदि इनका सात्त्विक बुद्धि से जोड़ न हो तो यह श्रेय के पथ पर नहीं ला सकते। आपका इस विषय में क्या विचार है?

३० मार्च १९६७

**परम पूज्य माँ -**

श्रद्धा और विश्वास राम, कहे साधना नींव है।
जिसमें यह रे फूट पड़ें, साधक वह ही जीव है।।

पर बिन जाने बिन पहचाने, गर कहें श्रद्धा रे है।
विश्वास भी कह दें रे है, अन्धापन ही तो यह है।।

श्रेय पथ पे तब ही तो चले, गर बुद्धि जागृत हो जाये।
बुद्धि समझे इस सत् को, और तुझी में खो जाये।।

अब तुम ही कहो हे राम मेरे, कवन श्रद्धा चाहिये।
बिन जाने श्रद्धा रे होये, तब रे क्या क्या पाइये।।

जान करी श्रद्धा जो हो, तब तो जाने तू मिले।
बिन जाने श्रद्धा कहें, क्या प्रेम पथिक हो सके।।

समझ मना है श्रद्धा क्या, विश्वास किसे रे कहते हैं।
किस पे क्यों विश्वास हुआ, वो भाव किसे रे कहते हैं।।

श्रद्धा तब ही मानिये, पूर्ण विश्वास जो हो जाये।
स्थूल सूक्ष्म कारण में, जीवन आवाज़ वह हो जाये।।

राम श्रेष्ठ है मान ले, और सब है वही बस जान ले।
निज से श्रेष्ठ उसको माने, है सत्य वह यह जान ले।।

जो वो कहे वह सत्य कहे, पूर्ण रुपेण मान ले।
फिर वही करे जो राम कहे, जितना जितना जान ले।।

गर माना है राम सत्य, और श्रद्धा उसी में हो जाये।
तो राम ने जो भी जब कहा, वो स्वतः ही हो जाये।।

जस जीवन में भाव रहा, वह भाव आपुनो हो जाये।
जैसा रंग था वा मन का, वही रंग आपुनो हो जाये।।

अपनी बुद्धि त्यज करी, राम की बुद्धि अपनाये।
हर वाक् अपना भूल करी, राम वाक् ही हो जाये।।

स्वयं कर्म में जो चाहे, बस न चाह कर अब वो चाहे।
जैसा राम ने जब चाहा, वो चाहना आपुनो हो जाये।।

श्रद्धापूर्ण विश्वास जो है, त्रैस्तर पर उसे श्रेष्ठ कहें।
कथनमात्र यह बात नहीं, बस वो है यह ही जान वो ले।।

जान करी जब मान वो ले, तब ही श्रद्धा जानिये।
जब लग यह सत् न जाने, श्रद्धा नहीं है जानिये।।

गर आपुनो तन राह में आये, श्रद्धा न्यून हो जाती है।
गर मन राहों में आ जाये, श्रद्धा रह नहीं पाती है।।

आपुनो निर्णय गर वो करे, श्रद्धा कहाँ रे रह सके।
या राम रहे या 'मैं' रहे, कब दोनों साथ रे रह सकें।।

बिन जाने यह श्रद्धा है, या जान करी यह आ जाये।
द्वौ में कोई भेद नहीं, वह तो राम में समा जाये।।

पूर्ण सतमय कर्म हो, पूर्ण सतमय मन रे हो।
पूर्ण सतमय ज्ञान रे हो, जो वो कहे अरे सत् ही हो।।

राम ने ज्यों रे कर्म किये, आपुनो सब संग छोड़ दिये।
निज तनो सुख निज मनो राज्य, छोड़ी के वो चल दिये।।

क्या इसी विधि कोई कर सके, ऐसो विश्वास है राम पे।
जो राम किया वही उचित रे था, सत्य उसको मान सके।।

गर विश्वास रे वहाँ पे हो, वो आप ही करता जायेगा।
निस्संकोच वा क़दमों में, साधक बढ़ता जायेगा।।

राम ने हक़ कभी माँगा नहीं, मान की चाहना नहीं करी।
जो कुछ था वा चरण धरा, धरी के मन वा मौन रही।।

जैसा मिला वहाँ सीस झुका, दिनचर्या में बहता रहा।
अमर तत्व जो सत्त्व है, जो जन्म जन्म बहता रहा।।

वही आज भी जानो बहे, दोष कहीं पे मन न दे।
कोई जो भी करे सो किया करे, विश्वास है जो वो ही करे।।

जो राम किया जो श्याम किया, जिसे मानो उसने रे किया।
जितनी जितनी श्रद्धा है, उतना भेद रे मिट गया।।

ज्ञान की राही आ जाये, या प्रेम की राही आ जाये।
दिनचर्या में कर्म करे, जिस भी राही आ जाये।।

सतमय कर्म रे गर हुए, प्रेम तो हो ही जायेगा।
सतकर्म नित देख करी, ज्ञान भी हो ही जायेगा।।

देख तोरे मन में है क्या, अरे भावना कैसी आपुनो है।
जैसी आंतरिक मान्यता, साधना वैसी आपुनो है।।

गर जीवन आपुनो वो ही भये, बिन जाने वो ही हो जाये।
तो राम को बिन जाने ही, वो राम आप ही हो जाये।।

ज्ञान राही भी यह ही हो, यह समझ करी वह हो जाये।
विश्वास उसी में बढ़ जाये, श्रद्धा वहीं पे हो जाये।।

तीव्र लग्न पूर्ण रे हो, विश्वास वहीं जब हो जाये।
दृढ़ निश्चय उसी में हो, श्रद्धा वह ही कहलाये।।

जब श्रद्धा राम में हो गई, तब वो ही हो जायेगा।
इस राही हाय जान मना, राममय हो जायेगा।।

पर मानो और मान करी, वो ही आप रे हो जाओ।
'परिस्थिति मेरी और है', कही के मन न बहलाओ।।

'वो युग और था कैसे हो, अब नहीं यह हो पाये'।
जो मन ऐसा रे कभी कहे, वो राममय नहीं हो पाये।।

ऐसा मूर्ख कौन रे है, उसे कहें पुनि पुनि समझ ले।
समझ समझ के समझ पड़े, विश्वास चाहे उभर पड़े।।

शनैः शनैः वह दीर्घकाल, विश्वास जो बढ़ता जायेगा।
श्रद्धापूर्ण विश्वास तेरा, राम में हो जायेगा।।

जब मान लिया पूर्ण मैं ने, तब विरुद्धता छूटेगी।
आपुनो मन विरोधी जो, वाकी अशुद्धता छूटेगी।।

वह विधि या यह विधि, श्रद्धा अखण्ड रे चाहिये।
जो भी हो जो विधि भी लो, उसे दिनचर्या में लाइये।।

लाये करी फिर जो भी कहो, वो सत् ज्ञान रे होयेगा।
आपुनो जीवन जान मना, वाका प्रमाण रे होयेगा।।

जब लौ आप न हो जाये, तब लौ ज्ञान न मानिये।
शब्दन की बातें कहें, वो आपुनो हैं न जानिये।।

जो कहे वो पूर्ण सत् कहे, पर आप सत् है न मानो।
अपने आप को देख तो लो, और कहाँ पे हो इतना जानो।।

सो ज्ञान की कोऊ बात नहीं, शब्दन् की वहाँ बात नहीं।
श्रद्धा की ही बात है, और रे कोई बात नहीं।।

जब 'मैं' बहु बली भये, 'मैं' भगवान रे हो जाये।
अपनी 'मैं' को आप कहे, निर्णय प्रधान तेरा हो जाये।।

बुद्धि राही समझ के, परिवर्तन निज में आ जाये।
नहीं राहों में बार बार, बुद्धि ही तो आ जाये।।

श्रद्धा बिन कुछ नहीं मिले, पर श्रद्धा कैसे आ पाये।
अटूट श्रद्धा कैसे हो, सत्यता मानी न जाये।।

निज मन ने निज बुद्धि ने, जग सम्पर्क से बहु पाया
प्रतिरूप सम्पर्क के, ज्ञान कहे बहु भाया।।

वो तो ज्ञान है ज्ञान नहीं, अरे सत्यता को जान लो।
राम कहा पर क्या रे कहा, उसको तो पहचान लो।।

द्वौ तेरे सामने हैं, इक 'मैं' खड़ा इक राम है।
देख देख अब देख मना, द्वौ में कौन प्रधान है।।

द्वौ को सामने तोल लो, तोल करी अरे देख तो लो।
श्रद्धा आपुनो कहाँ पे है, इसको सामने देख तो लो।।

विश्वास आपुनो कहाँ पे है, इसको सामने देख तो लो।
आपुनो पे जो गुमान है, तो बुद्धि राह से देख लो।।

सो समझ मना समझ करी, सत् आवाहन अब करो।
बुद्धि तुला बनी बैठी है, तो बुद्धि राही देख तो लो।।

सो कैसी श्रद्धा वहाँ पे है, इसको प्रथम मन देख तो लो।
क्या सत् में आपुनो श्रद्धा है, अपने आप में देख तो लो।।

इतनी बात है समझ मना, समझ करी कहो राम राम।
श्रद्धा सत् में हो जाये, उसे जान करी कहो राम राम।।

राम राम राम..... ❖

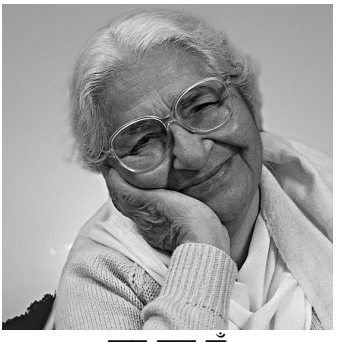

परम पूज्य माँ

# अर्पणा
## समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
२६ अगस्त २०१६

# अर्पणा समाचार

### *अर्पणा दिवस - परम पूज्य माँ का जन्मोत्सव*

२३-२६ अगस्त से परम पूज्य माँ के जन्मदिवस का समारोह मनाने के लिए परिवार एवं मित्रगण, भक्तजन एवं सतचाहुक लोग अर्पणा आश्रम में पधारे।

- २३ अगस्त को अर्पणा अस्पताल के स्टाफ़ ने उत्साहपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।
- २४ अगस्त को अर्पणा द्वारा चलाये जा रहे स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने ख़ुशी एवं गर्मजोशी से अर्पणा मन्दिर में गीत और नृत्य प्रस्तुत किये।

- २५ अगस्त की संध्या को परम पूज्य माँ के साधना काल के स्वतः स्फुरित प्रवाह 'उर्वशी' से सुप्रसिद्ध गायिका, विनीता गुप्ता ने अपने भक्तिपूर्ण गायन से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

- इसके बाद आश्रम के बच्चों द्वारा नृत्य प्रस्तुत किये गये।
- २६ अगस्त को श्री कृष्ण अरोड़ा के नेतृत्व में 'उर्वशी ललित कला एकादमी' के छात्रों द्वारा भक्तिपूर्ण गायन प्रस्तुत किया गया।

### *'संत जना बाई' - एक भक्तिपूर्ण प्रस्तुति*

२६ अगस्त की संध्या को अर्पणा परिवार के सदस्यों द्वारा ध्वनि प्रकाश एवं अभिनय के माध्यम से इस भक्तिपूर्ण नाटक का मंचन किया गया। बचपन से ही भक्ति से ओत-प्रोत, संत जना बाई अपनी सभी दैनिक गतिविधियों में भगवान विठोबा की उपस्थिति का अनुभव करती हैं। भगवान की रेशमी ओढ़नी के चोरी के इलज़ाम में, भगवान उसके लिए सुनिश्चित किये गये मृत्यु दंड से उसे बचाने के लिए स्वयं प्रकट होते हैं, और इस प्रकार सभी ग्रामीण और पुजारी जन उसे भगवान का सर्वोच्च भक्त जान लेते हैं।

# अर्पणा अस्पताल

### *नेत्र जाँच व जागरूकता शिविर*

विश्वभर में ३.९० लाख नेत्रहीन लोगों की जनसंख्या का २० प्रतिशत भारत में है। अर्पणा अस्पताल के 'नेत्र कार्यक्रम' के अन्तर्गत घरौंडा बलॉक के गाँवों में नेत्र जाँच एवं जागरूकता शिविर आयोजित किये।

| | |
|---|---|
| १. छात्रों की जाँच : | ५६२ |
| २. शिक्षकों का प्रशिक्षण : | २२ |
| ३. सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम : | १० |
| ४. लोगों को अवगत कराया : | २०० |

# हिमाचल की गतिविधियाँ

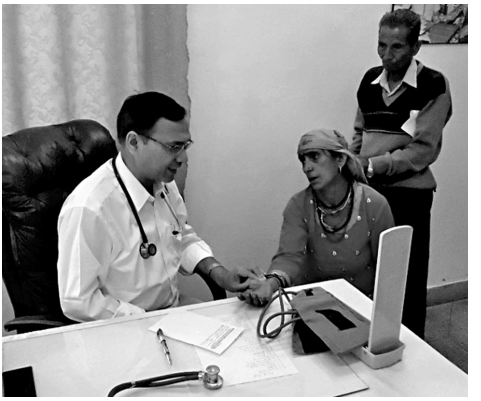

### *निःशुल्क चिकित्सा शिविर*

९-११ जून को अर्पणा स्वास्थ्य एवं जाँच केन्द्र, अपर बकरोटा, डलहौज़ी में अर्पणा के उच्च मान्य Dr. R I Singh MBBS(Hons), MD (Gold Medalist), FIMSA द्वारा एक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इसमें १५० रोगी लाभांवित हुए, विशेष रूप से जिन्हें कोई डॉक्टरी या चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं थी। यह शिविर 'बैज नाथ भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट' द्वारा प्रायोजित किया गया।

### *अमरीका से आये स्वयंसेवकों ने चम्बा, (HP) में मूल्य एवं भाषा कौशल बताये*

हीथर थॉम्पसन एवं केट मिलर, वर्जीनिया विश्वविद्यालय से स्वयंसेवक और शिकागो से एक स्वयंसेवक, नूह ली बेन ने अर्पणा के गजनोई, चम्बा केन्द्र में, ६ सप्ताह बिताये जहाँ उन्होंने १६ छात्रों को संवादी अंग्रेज़ी में बोलचाल का कौशल सिखाया। पर्यटन के क्षेत्र में, गाईड के रूप में नौकरी खोजने हेतु उन्हें सक्षम करने के लिए अर्पणा उनका प्रशिक्षण कर रहा है, जिससे वे घर से काम कर सकें एवं क्षेत्र में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ा सकें।

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध चम्बा शहर के दौरे करते हुए, स्वयंसेवकों ने व्यावहारिक अंग्रेज़ी भाषा छात्रों को सिखाई। संवादी अंग्रेज़ी की मूल बातें सीख कर छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ा।

अर्पणा, हीथर, केट मिलर और नूह को उनके समर्पण और छात्रों के प्रशिक्षण को यादगार एवं उत्साहपूर्ण अनुभव बनाने के लिए उनका धन्यवाद करता है।

# दिल्ली के कार्यक्रम

## शिक्षा - कड़ी मेहनत का परिणाम!

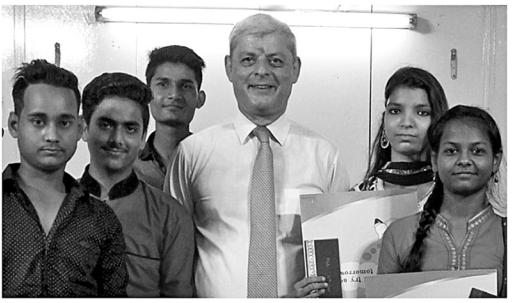

### अर्पणा के छात्र सम्मानित किये गये

१९ जुलाई को, मोलरबन्द के अर्पणा केन्द्र के १२वीं और १०वीं के बोर्ड परीक्षा को पारित करने वाले छात्रों को एक वार्षिक कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। बहुराष्ट्रीय कम्पनी, अवीवा कं., के प्रमुख श्री ट्रेवर बुल, मुख्य अतिथि, ने छात्रों को पुरस्कार से सम्मानित किया।

मनीष और कीर्ति, ने १२वीं बोर्ड की कक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त करने का सारा श्रेय 'अर्पणा' को दिया।

नर्सरी के बच्चों, बड़ी कक्षाओं की लड़कियों एवं लड़कों ने ३ अद्‌भुत नृत्यों का प्रदर्शन किया।

*सुनहरे भविष्य की ओर...*

### शिक्षकों को सम्मानित

बोर्ड परीक्षा के इतने अच्छे परिणामों के लिए शिक्षकों को भी उनके समर्पण और कड़ी मेहनत के लिए सम्मानित किया गया।

## अर्पणा का वसंत विहार सामुदायिक केन्द्र - 'रिजॉयस'

### 'रिजॉयस' में पद्‌मजा द्वारा प्रदर्शन

६ अगस्त को, गिरिजा देवी की शिष्या, पद्‌मजा चक्रबर्ती का 'रिजॉयस' में स्वागत कर पाना हमारे लिए सम्मान की बात थी। उनके सुन्दर संगीत द्वारा दर्शक आनन्दविभोर हो उठे।

### पोषण के लिए पारस्परिक उत्साहपूर्ण सत्र

प्रख्यात पोषण विशेषज्ञ, डॉ वीना अग्रवाल, द्वारा केन्द्र में ९ जुलाई को पोषण स्वास्थ्य पर एक जीवंत सत्र का आयोजन किया गया। डीएनए परीक्षण के परिणाम से पता चल सका कि व्यक्ति विशेष में किन आवश्यक पोषण तत्वों की कमी है।

*डॉ वीना अग्रवाल उपस्थित जनों के मध्य में (बॉयें से पाँचवें स्थान पर)*

# ग्रामीण हरियाणा

## *गाँव के लिए बेहतर शासन*

*पंचायत के सदस्यों के साथ सत्र*

अर्पणा द्वारा लगभग १००० महिला स्वयं सहायता समूहों की १३००० महिला सदस्यों को सशक्त किया गया है। ५००० ने तो अपने कारोबार भी शुरू कर दिये हैं। वे अपनी साथी महिलाओं को, विशेष रूप से बच्चों और गर्भवती महिलाओं से सम्बन्धित, स्वास्थ्य जानकारी देती हैं।

लिंग भेदभाव के खिलाफ़ अभियान के चलते महिला परिषद् की सदस्यों का समर्थन करते हुए बेहतर ग्रामीण शासन को भी बढ़ावा मिला।

अर्पणा एवं ADIG द्वारा, जुलाई मास में, लम्बे समय से हमारे साथी IDRF (USA) के सहयोग से एक स्थानीय गवर्नेंस परियोजना आरम्भ की गई।

संवेदनशील और ज़िम्मेदार गाँव के शासन की सुविधा के लिए क्षमता निर्माण और प्रासंगिक कौशल को बढ़ावा देकर पंचायतों को सशक्त बनाना ही इसका लक्ष्य है।

२९ जून को, ५ पंचायतों के २५ निर्वाचित सदस्यों के लिए पहला प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया। ब्लॉक के विकास कार्यालय के अधिकारियों ने भी इसमें भाग लिया। निर्वाचित महिला सदस्यों ने भी गाँव के विकास की योजना बनाने के लिए दिशा-निर्देशों को सीखा। अर्पणा ५ गाँवों के वार्ड सदस्यों के साथ मिल कर सर्वेक्षण के लिए काम कर रहा है।


***We, at Arpana, depend on your support for our programs***

**Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.**
**FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001**
**FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002**

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to:
**Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037**
Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:
**Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037**
Send contributions in USA to:
**Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive, North Bethesda, MD 20852**
**Mr. Jagjit Singh, AID for Indian Development, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249**
Send contributions to Arpana Canada:
**c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada**
**Arpana Hospital:** 91-184-2380801, **Info & Resources Office:** 91-184-2390905
emails: **at@arpana.org and arct@arpana.org**
Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.

**Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9873015108, 91-9034015109**
**Websites: www.arpana.org www.arpanaservices.org**

# *Premier* Wealth Creators Pvt. Ltd.

*Plan Wisely, Live Fully*

***"A Goal without a Plan is just a Wish"***

## Famous Words from most successful Investors in the world:

- **Earning**: "Never depend on single income. Make investment to create a second source".
- **Spending**: "If you buys things you do not need, Soon you have to sell things you need".
- **Savings**:" Do not save what is left after spending, but spend what is left after saving".
- **Risk**: "Never Test the depth of river with both the feet".
- **Investment**: "Do not put all eggs in one basket".
- **Expectation**: "Honesty is expensive gift. Do not expect it from cheap people".

The investor should have a Financial Plan for financial goals. Intelligent investing isn't get-rich-quick process. Neither is it a panacea, or one-size-fits-all process. It is rather a process that allows investors to reach certain financial goals through a carefully crafted financial plan.

Please feel free to call or mail us for:
Rajender Rautela : +918800779485 : rajenderr@wealth-creators.in,

www.wealth-creators.in

**Financial Planning** **Wealth Management** **Investment Advisory**

# *Premier* Wealth Creators Pvt. Ltd.

## *Plan Wisely, Live Fully*

**"A Goal without a Plan is just a Wish"**

Have you planned for your Retirement or any other Financial Goal ???. We assist you in reaching your Financial Goal through Financial Planning

**Financial Planning Wealth Management Protection Planning Investment Advisory**

Call or mail us for:

Rajender Rautela : +918800779485 : rajenderr@wealth-creators.in, www.wealth creators.in